श्री गायत्री चालीसा
चित्रावली
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

श्री गायत्री चालीसा पाठ की महिमा

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

श्री गायत्री दिव्य शक्तियों की जननी है उनमें कितनी शक्तियाँ समाई हुई हैं, आज के समय में तो कोई विरला ही माई का लाल जानता होगा। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने साधनात्मक अनुभव के आधार पर उनकी महिमा का गान किया है। उसी महिमा का जनसाधारण को बोध कराने के लिए परम पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने गायत्री चालीसा की रचना की है। इस गायत्री चालीसा का नियमित पाठ करने से श्री गायत्री की शक्तियों का ज्ञान होता है। औषधि का गुण-धर्म जानने के पश्चात ही उसका लाभ उठाया जा सकता है। उसी प्रकार भगवती गायत्री की शक्तियों से लाभान्वित होने के लिए उनकी शक्तियों का महत्त्व समझना चाहिए। इसी आधार पर इस सचित्र गायत्री चालीसा की रचना की गई है। इसके नित्य पाठ से श्री गायत्री की मर्यादा, प्रकृति और शक्तियों की जानकारी मिलेगी। समुद्र मंथन में मात्र १४ रत्न निकले थे किंतु इस गायत्री मंत्र में २४ रत्न भरे पड़े हैं। उनका उपयोग करके अपने को श्रेष्ठ बनाना मनुष्य के अपने वश की बात है। अस्तु गायत्री उपासना का यह प्रथम चरण है।

श्री गायत्री चालीसा का पाठ करने से हमारी यह धारणा दृढ़ होती है कि गायत्री देवमाता, वेदमाता एवं विश्वमाता है। इस धारणा से हमारी श्रद्धा, भक्ति तथा निष्ठा को बड़ा बल मिलता है। जिसको पारसमणि के महत्त्व का ज्ञान होता है, वही उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है तथा उसका उपयोग करके लाभान्वित होता है। तो आइए! हम सब भी गायत्री चालीसा का पाठ करें। उसमें वर्णित महिमा का गान करें, चित्रों में उसका स्वरूप देखते हुए माता गायत्री का कृपा प्रसाद ग्रहण करें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुख माप्नुयात॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ वन्दे वेद मातरम् ॥

श्री गायत्री चालीसा

दोहा-ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड।
शांति, क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखंड ॥ १ ॥
जगत जननि, मंगल करनि, गायत्री सुखधाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा, पूरन काम ॥ २ ॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी। गायत्री नित कलिमल दहनी॥
अक्षर चौबिस परम पुनीता। इनमें बसें शास्त्र, श्रुति, गीता॥
शाश्वत सतोगुणी सत रूपा। सत्य सनातन सुधा अनूपा॥
हंसारूढ़ श्वेतांबर धारी। स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी॥
पुस्तक पुष्प कमंडलु माला। शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत, दुख दुरमति खोई॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया। निराकार की अद्भुत माया॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई। तरै सकल संकट सों सोई॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली। दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं। जो शारद शत मुख गुन गावैं॥
चार वेद की मातु पुनीता। तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥
महामंत्र जितने जग माहीं। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै। आलस पाप अविद्या नासै॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी। कालरात्रि वरदा कल्याणी॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते। तुम सों पावें सुरता तेते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे। जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥

महिमा अपरंपार तुम्हारी।
जै जै जै त्रिपदा भय हारी॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना।
तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा॥
जानत तुमहिं, तुमहिं है जाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई।
माता तुम सब ठौर समाई॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता।
पालक पोषक नाशक त्राता।
मातेश्वरी दया व्रत धारी।
तुम सन तरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई।
तापर कृपा करें सब कोई॥
मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें।
रोगी रोग रहित है जावें॥
दारिद मिटै कटै सब पीरा।
नाशै दुःख हरै भव भीरा॥
गृह क्लेश चित चिंता भारी।
नासै गायत्री भय हारी॥

संतति हीन सुसंतति पावें।
सुख संपत्ति युत मोद मनावें॥
भूत पिशाच सबै भय खावें।
यम के दूत निकट नहिं आवें॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई।
अछत सुहाग सदा सुखदाई॥
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥
जयति जयति जगदंब भवानी।
तुम सम और दयालु न दानी॥
जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें।
सो साधन को सफल बनावें॥
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी।
लहैं मनोरथ गृही विरागी॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता।
सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि-मुनि, जती, तपस्वी, जोगी।
आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी॥
जो जो शरण तुम्हारी आवें।
सो सो मनवांछित फल पावें॥
बल बुद्धि विद्या शील स्वभाऊ।
धन वैभव यश तेज उछाऊ॥
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना॥

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

दोहा

ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड।
शांति, क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखंड॥

हे महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली रूपों में स्थित श्री गायत्री माँ! आप हमारे जीवन में ज्ञान ज्योति प्रकाशित करने वाली हो तथा हमें मेधा, प्रभा, प्रतिभा, शांति, क्रांति जाग्रति, प्रगति व अखंड शक्ति प्रदान करने वाली हो।

दोहा

जगत जननि, मंगल करनि, गायत्री सुखधाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा, पूरन काम॥

आप विश्वमाता के रूप में जगत का कल्याण करती हो। आप में समस्त सुख निवास करते हैं। हे सावित्री, स्वाहा, स्वधा! स्वरूपा पूर्णकाम माँ गायत्री, हम आपको प्रणाम करते हैं।

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी।
गायत्री नित कलिमल दहनी॥

पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग में जहाँ-जहाँ ओंकार व्याप्त है, वहाँ आप भी गायत्री के रूप में निवास करती हो और कलि के प्रभाव को नष्ट करती हो।

अक्षर चौबिस परम पुनीता।
इनमें बसें शास्त्र, श्रुति, गीता॥
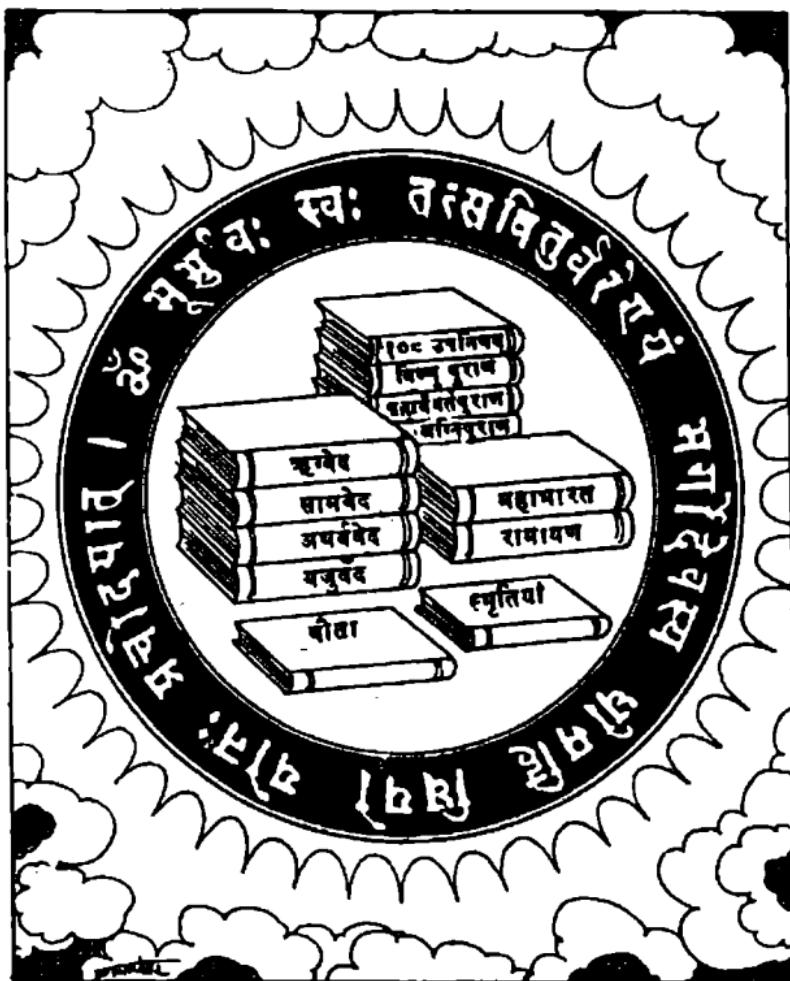
आपके (गायत्री के) जो २४ अक्षर हैं, वे परम पुनीत होने से पुण्य प्रदान करने वाले हैं। इन अक्षरों में समस्त शास्त्र, श्रुति और गीता आदि का समावेश है। जो व्यक्ति शास्त्र आदि पढ़ने में असमर्थ हैं, वे आपके इन २४ अक्षरों के जप व स्मरण मात्र से शास्त्र अध्ययन का फल प्राप्त कर लेते हैं।

शाश्वत सतोगुणी सत रूपा।
सत्य सनातन सुधा अनूपा॥

आपके ये चौबीस अक्षर शाश्वत हैं, सत्वगुण संपन्न हैं, सनातन हैं। सत्य का मार्ग प्रदर्शन करने वाले हैं तथा अमृततुल्य, कल्याणकारी व सुपथ पर चलाने वाले हैं।

हंसारूढ़ श्वेतांबर धारी।
स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी॥

हे श्वेतांबर धारण करने वाली, स्वर्ण कांति से युक्त, हंस पर विराजित होकर गगन में विहार करने वाली माँ गायत्री!

पुस्तक पुष्प कमंडलु माला।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥

आपके एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में पुष्प, तीसरे में कमंडलु तथा चौथे हाथ में माला सुशोभित है। हे शुभ्रवर्णा, हे विशाल नेत्रों वाली गायत्री माँ!

ध्यान धरत पुलकित हिय होई।
सुख उपजत, दुख दुरमति खोई॥

आपके इस स्वरूप का ध्यान करने से हमारा हृदय पुलकित हो जाता है। हमारा हृदय हर्ष और उत्साह से भर उठता है। क्लेश और दुष्प्रवृत्तियों का नाश हो जाता है। हमें सुख संपत्ति प्राप्त होती है।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया।
निराकार की अद्भुत माया॥
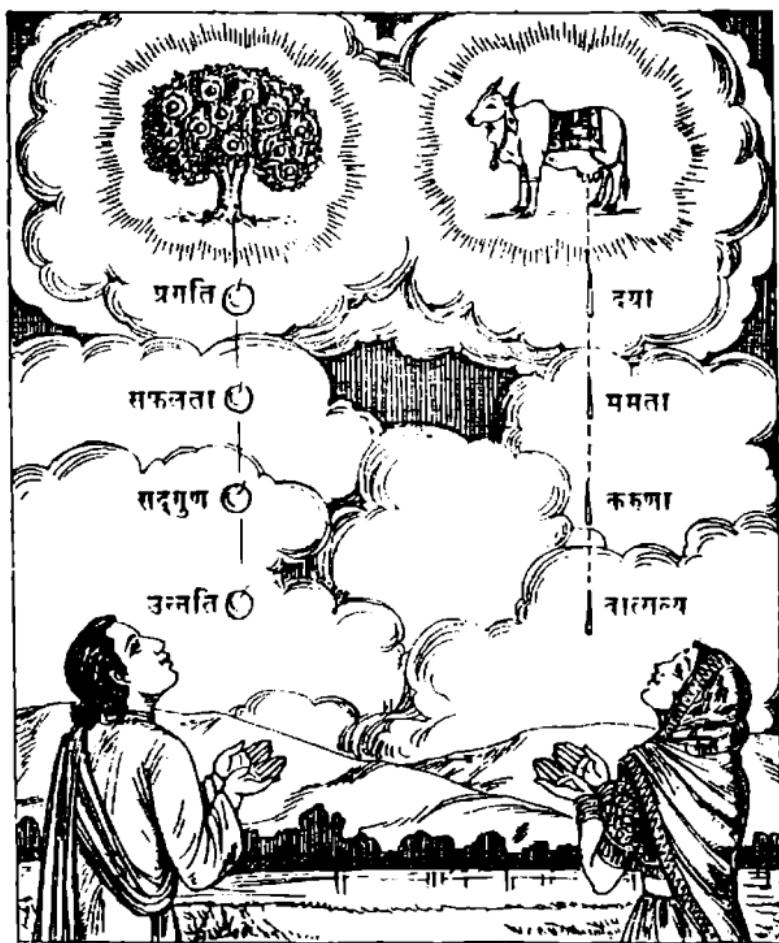
जिस प्रकार कल्पवृक्ष और कामधेनु मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं, उसी प्रकार आप भी अपने साधकों की समस्त सात्त्विक मनोकामनाओं को सिद्ध करती हैं। आप निराकार और निर्विकार हैं, फिर भी आपकी माया अपरंपार है। वह ऐसी अद्भुत है कि दृष्टिगोचर नहीं होती, अनुभव की जा सकती है।

तुम्हरी शरण गहै जो कोई।
तरै सकल संकट सों सोई॥

जो कोई व्यक्ति आपकी शरण में आता है वह समस्त संकटों और दु:खों से मुक्त हो जाता है और सुख-शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥

हे माँ! आप ही सरस्वती हो, आप ही लक्ष्मी हो तथा आप ही महाकाली हो। इन तीनों स्वरूपों में आपकी दिव्य ज्योति निराले रूप में ही देदीप्यमान होती है।

तुम्हरी महिमा पार न पावैं।
जो शारद शत मुख गुन गावैं॥

आपकी महिमा अपरंपार है, इसका कोई पार नहीं। शेष और शारदा द्वारा अनेक मुखों से गान करने पर भी आपकी महिमा का पार नहीं पा सकते।

चार वेद की मातु पुनीता।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥

आप चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) की जननी हो। आप ब्रह्माणी हो, गौरी हो तथा आप ही सती शिरोमणि सीता स्वरूपा हो।

महामंत्र जितने जग माहीं।
कोऊ गायत्री सम नाहीं।।

विश्व में जितने भी मंत्र हैं, उनमें आपके (गायत्री मंत्र) समान न तो अतीत में कोई था न वर्तमान में है और न भविष्य में होगा। आप समस्त मंत्रों की शिरोमणि हैं।

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै। आलस पाप अविद्या नासै॥

इस मंत्र (गायत्री मंत्र) के सतत् जप से मानव हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। पाप तथा अविद्या रूपी अंधकार का नाश हो जाता है। निष्क्रियता समाप्त हो जाती है और स्फूर्ति की प्राप्ति होती है। पुण्य एवं विद्या प्राप्त होती है।

सृष्टि बीज जग जननि भवानी।
कालरात्रि वरदा कल्यानी॥
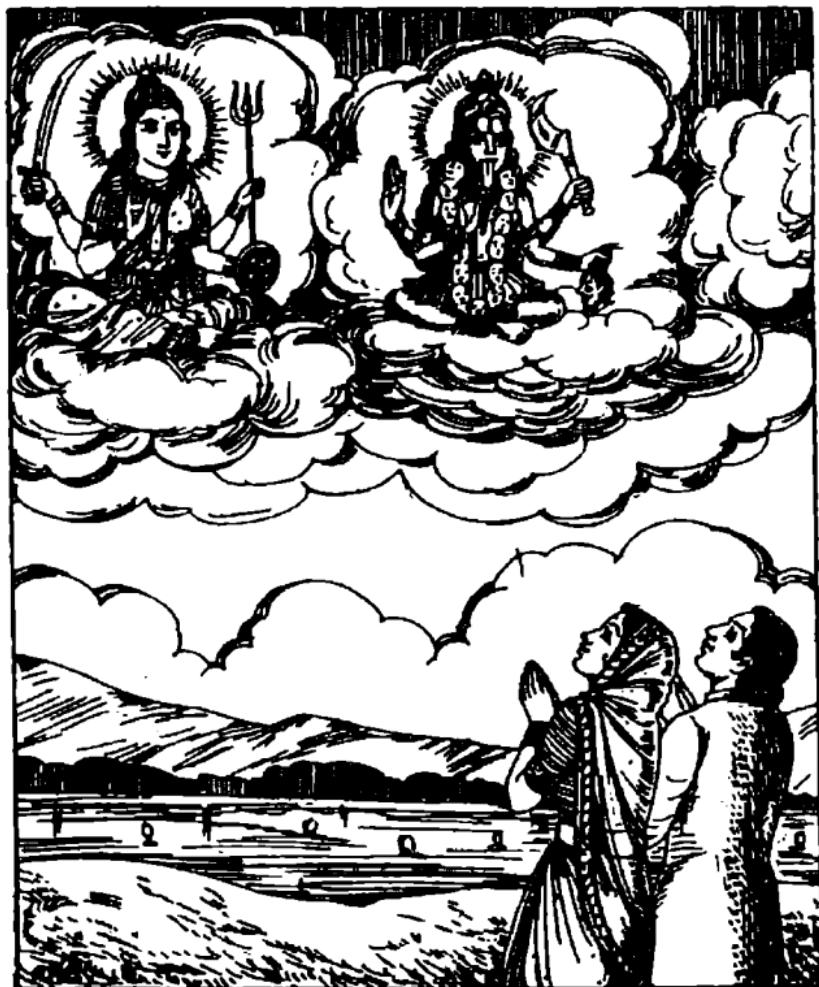
हे माँ! आप सृष्टि के बीज रूप में जगत जननी हैं। हे भवानी! आप ही काल रात्रि हैं तथा आप ही विश्व का कल्याण करने वाली हैं।

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते।
तुम सों पावें सुरता तेते॥

हे सर्व शक्तिमान आद्याशक्ति, ब्रह्मा को सृजन, विष्णु को पालन तथा शिव को संहार करने की शक्ति आपने ही प्रदान की है। इनके अतिरिक्त अन्य सुरगणों को भी सुरता आपकी ही प्रदान की हुई है।

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥

हे दयामयी माँ! आप भक्तों की एकमात्र आश्रयदाता हैं। भक्त आपके हैं तथा आप भक्तों की हैं। आपको ये भक्त पुत्र प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं।

महिमा अपरंपार तुम्हारी।
जै जै जै त्रिपदा भयहारी॥

हे माता गायत्री! आपकी महिमा का पार नहीं पाया जा सकता। समस्त भय समूह को नष्ट करने वाली त्रिपदा गायत्री माता आपकी केवल जय जयकार करने से समस्त भय भाग जाते हैं।

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना।
तुम सम अधिक न जग में आना॥

इस अखिल विश्व ब्रह्मांड में जो भी ज्ञान-विज्ञान व्याप्त है वह सब आपकी ही प्रभुता है। इस विश्व में आपसे बड़ा कोई तत्त्व नहीं है।

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेषा॥

हे ज्ञानेश्वरी! आप अनंत ज्ञान की भंडार हैं। आपको जान लेने के पश्चात ऐसा कुछ शेष नहीं रहता जिसे जाना जाए। आपको प्राप्त कर लेने के पश्चात आपको जान लेने वाला निष्काम हो जाता है उसे कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता।

जानत तुमहिं, तुमहिं है जाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥

हे सर्वोच्च सत्ता धारिणी माते! आपका ज्ञान हो जाने पर साधक की सत्ता आप में ही समा जाती है उसका कोई पृथक अस्तित्व नहीं रह जाता। जिस पारसमणि के स्पर्श से कुधातु भी स्वर्ण बन जाती है उसी भांति आपका साधक भी साध्यमय हो जाता है।

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं।
माता तुम सब ठौर समाई॥
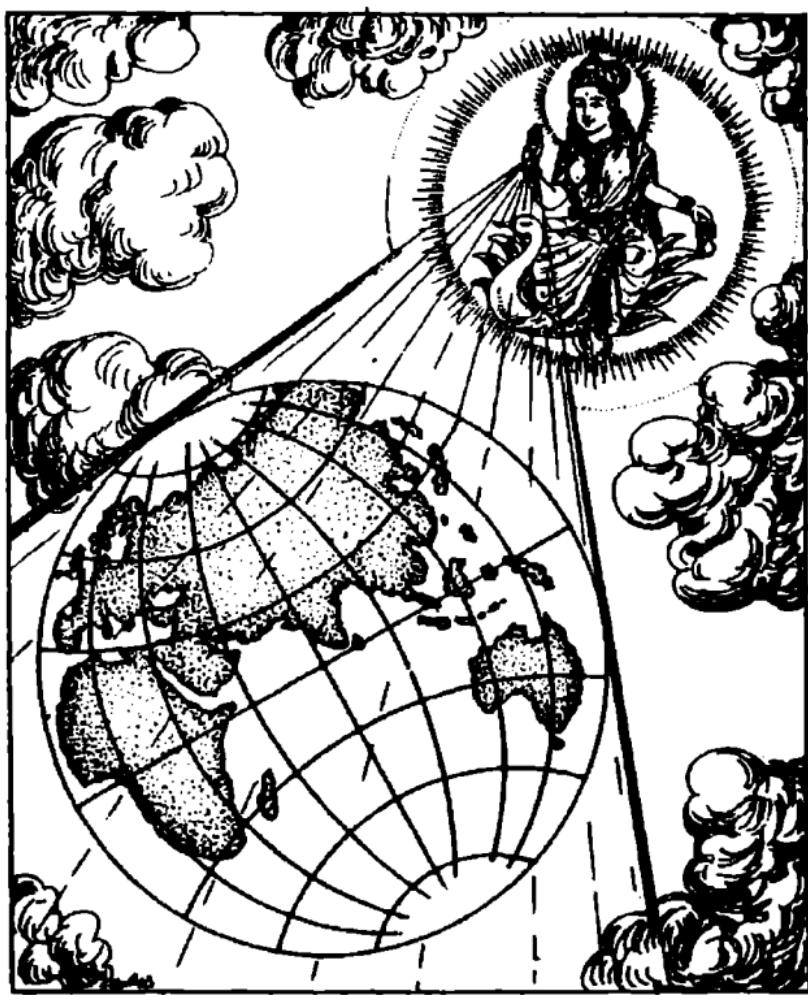
आपकी दिव्य शक्ति सर्वत्र व्याप्त है। तीनों लोकों में कोई स्थान ऐसा नहीं है जहाँ आपकी दिव्य शक्ति का प्रकाश न हो। हे सर्वव्यापिनी माँ गायत्री! आप तीनों लोकों में समाई हुई हैं।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्मांड घनेरे।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
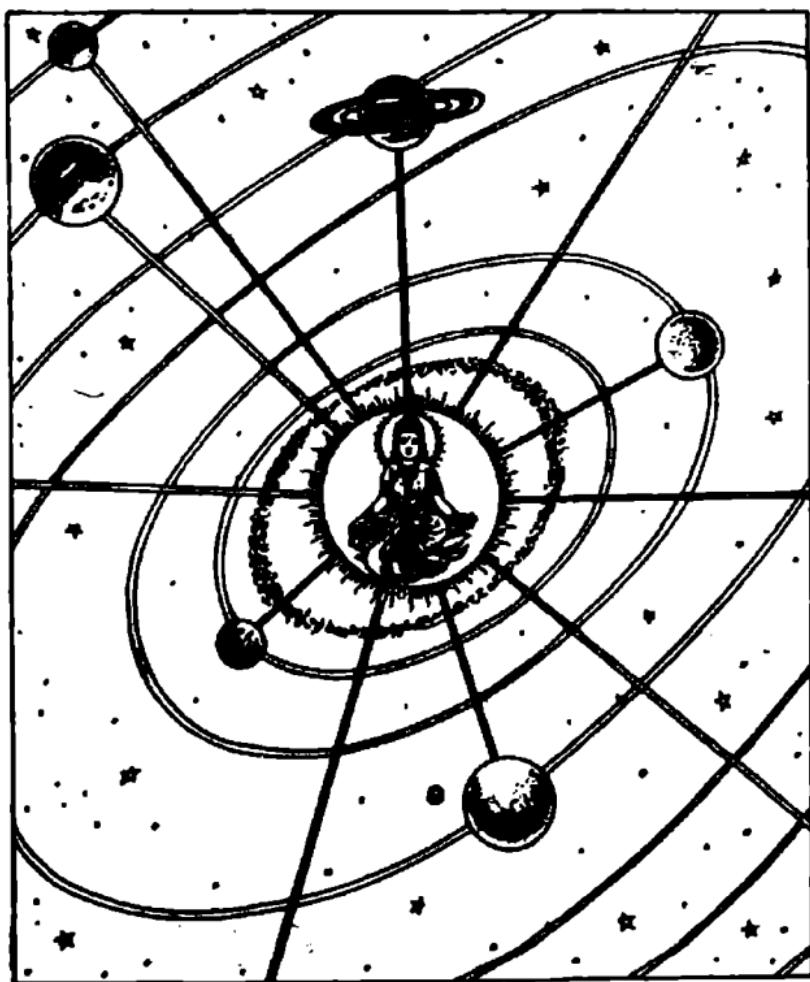
विश्व ब्रह्मांड के समस्त ग्रह-नक्षत्र आपकी ही गति से गतिमान हैं तथा जीव सृष्टि के समस्त क्रिया-कलाप आपकी प्रेरणा से हो रहे हैं।

सकल सृष्टि की प्राण विधाता।
पालक पोषक नाशक त्राता॥

आप समस्त सृष्टि को प्राणवान बनाए हुई हैं। आपकी ही प्रेरणा से सृष्टि का सृजन, पालन और संहार होता है। इस संसार से अपने भक्त को आप ही पार लगाती हैं।

मातेश्वरी दया व्रत धारी। तुम सन तरे पातकी भारी॥

हे दयामयी माँ! आप दया का व्रत धारण किए हुए हो। आप अत्यंत दयावान हो। आपकी दया और कृपा से बड़े से बड़ा पातकी भी संसार सागर से पार हो जाता है।

जापर कृपा तुम्हारी होई।
तापर कृपा करें सब कोई॥

जिस पर आपकी कृपा होती है, उस पर सभी कृपा करते हैं। बलवान से बलवान विरोधी भी उसका बाल बाँका नहीं कर सकता।

मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें।
रोगी रोग रहित है जावें॥

जो व्यक्ति मंद बुद्धि, विद्याभ्यास में निर्बल तथा विक्षिप्त ही क्यों न हो आपकी शरण में आने पर एवं आपके महामंत्र गायत्री मंत्र का जप करने से मेधावी होकर विद्याभ्यास करने में पूर्ण समर्थ हो जाता है तथा रोगी रोगमुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ हो जाता है।

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा।
नाशै दुःख हरै भव भीरा॥
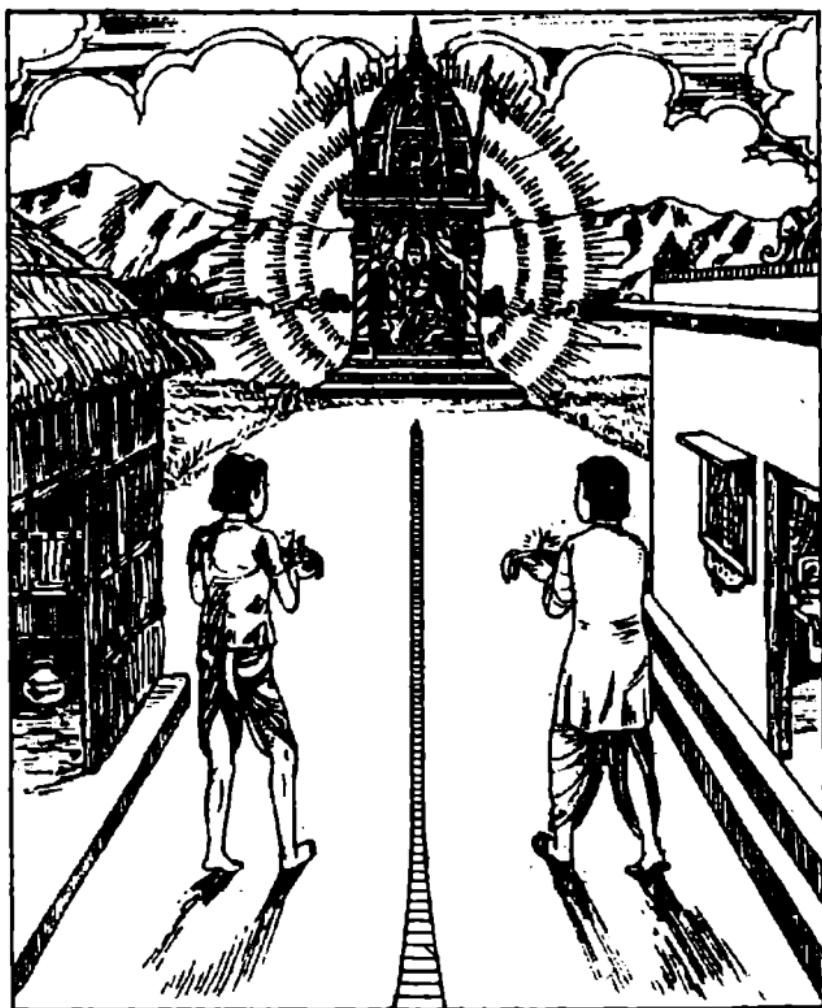
कैसा भी दुखी और निर्धन व्यक्ति हो, आपकी शरण में आने पर उसके समस्त अभाव मिट जाते हैं तथा दुखों का निवारण हो जाता है, साथ ही भव बंधन से भी मुक्त हो जाता है।

गृह क्लेश चित चिंता भारी।
नासै गायत्री भय हारी॥

हे विघ्न विनाशिन माँ! आपके अनुग्रह से पारिवारिक कलह एवं समस्त दुश्चिंताएँ दूर हो जाती हैं। हे अभयदायिनी शक्ति! आप अपने जन के भय समूह को पल भर में नष्ट कर देती हो।

संतति हीन सुसंतति पावें।
सुख संपत्ति युत मोद मनावें॥

आपकी आराधना करने वाले व्यक्ति को आप सुसंतति प्रदान करती हो, आपका आराधक दैवी संपत्तियाँ प्राप्त करता है और आनंदमय जीवन व्यतीत करता है।

भूत पिशाच सबै भय खावें।
यम के दूत निकट नहिं आवें॥

आपके मंत्र (गायत्री मंत्र) जप करने से भूत पिशाचादि दुष्ट आत्माएँ भयभीत होकर भाग जाती हैं। गायत्री मंत्र के जपकर्त्ता के निकट यमदूत भी नहीं आ सकते क्योंकि वह तो गायत्री मंत्र के जप के प्रभाव से बैकुंठ धाम जाने का अधिकार प्राप्त कर लेता है।

जो सधवा सुमिरें चित लाई।
अछत सुहाग सदा सुखदाई॥

सौभाग्यवती स्त्री गायत्री चालीसा का एकाग्र चित्त से पाठ करती है वह अखंड सौभाग्य प्राप्त करती है। दांपत्य सुख भोगती हुई अपने जीवन को सार्थक बनाती है।

घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥

जो कुमारी कन्याएँ इस चालीसा का पाठ करती हैं उन्हें सुंदर पति एवं संपन्न घर मिलता है। जो विधवा स्त्री इस चालीसा का पाठ करती है, उसका सतीत्व रूपी सत्य धर्म सुरक्षित रहता है।

जयति जयति जगदंब भवानी।
तुम सम और दयालु न दानी॥

हे जगदंबे, हे भवानी! आपकी जय हो, जय हो। हे दयामयी, आपके समान दयावान, दानी और उदार अन्य कोई नहीं है।

जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें। सो साधन को सफल बनावें॥

जो व्यक्ति सद्गुरुदेव से गायत्री मंत्र की दीक्षा प्राप्त करता है, उसकी सभी साधनाएँ सफल होती हैं। सद्गुरुदेव के प्राप्त न होने पर आप ही को गुरु रूप मानकर साधना करता है उसके सभी कार्य सफल होते हैं।

सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी।
लहैं मनोरथ गृही विरागी॥

हे गायत्री माता! जो व्यक्ति सहज श्रद्धा, सुरुचि एवं निष्ठापूर्वक आपका स्मरण करता है, वह परम सौभाग्यशाली है। हे माँ! आपके स्मरण करने से गृहस्थ एवं गृहत्यागी दोनों ही मनोनुकूल श्रेष्ठ अनुदान प्राप्त करते हैं।

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता।
सब समर्थ गायत्री माता॥

हे वरदायिनी माँ! आप अपने भक्तों को आठ प्रकार की सिद्धियाँ (अणिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, वशिता, श्रुत, दृष्ट शक्ति प्रेरणा) तथा नौ निद्धि (शंख, मकर, कच्छप, पद्म, महापद्म, मुकुंद, कुंद, नील, चर्या) प्रदान करने में समर्थ हैं।

ऋषि-मुनि, जती, तपस्वी जोगी।
आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी॥

ऋषि, मुनि, यति, तपस्वी, योगी, सिद्धजन तथा दुखी, अर्थ की इच्छा रखने वाला, चिंता मग्न तथा संसारी।

जो जो शरण तुम्हारी आवें।
सो सो मनवांछित फल पावें॥

जो-जो भी आपकी शरण में आता है वह मनोनुकूल फल प्राप्त कर लेता है।

बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ।
धन वैभव यश तेज उछाऊ॥
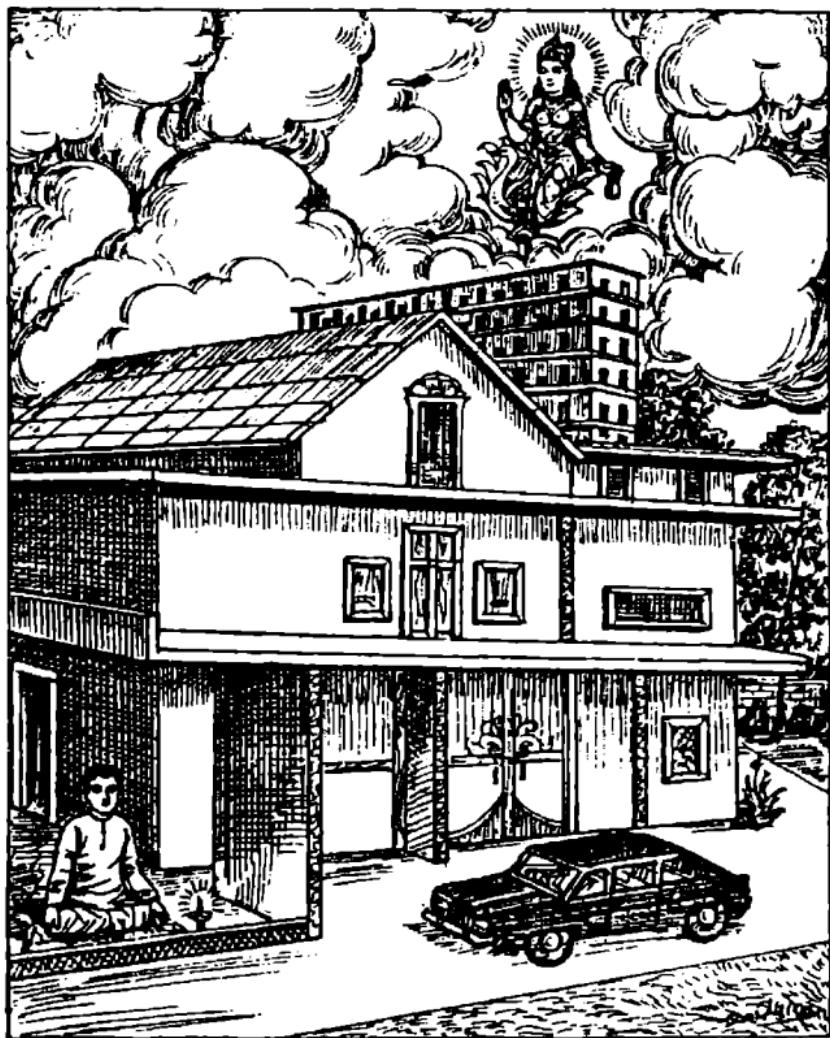
हे मातेश्वरी! तेरी कृपा से बलवान, बुद्धिमान, विद्वान, शीलवान ये सभी अर्थ, वैभव, यश, तेजस्विता तथा उत्साह प्राप्त करते हैं।

सकल बढ़ें उपजें सुख नाना।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना॥

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय॥

जो व्यक्ति श्रद्धा–निष्ठापूर्वक आपका ध्यान करते हुए इस गायत्री चालीसा का नित्य पाठ करते हैं, वे श्रेय और प्रेय (सांसारिक सुख एवं पारलौकिक सुख) दोनों ही प्राप्त करते हैं तथा उन पर सदैव आपका वरदहस्त बना रहता है।

**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

अंधकार में प्रकाश देने वाली वेदमाता, रक्षक, प्राणाधार, दुखनाशक, आनंददायक, हम आपके सुंदर, दिव्य एवं तेजोमय रूप का ध्यान करते हैं। आपको प्राणार्पण करते हैं अर्थात आपको सब सुख सौंपते हैं। जिससे हमारी बुद्धि स्थिर हो सके। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

गायत्री आर्य संस्कृति की माता एवं यज्ञ सनातन धर्म का पिता है

"श्रेष्ठ गुण संपन्न माता-पिता से श्रेष्ठ संतान का जन्म होता है।" ईश्वरीय विधान के अनुसार अपना चरित्र निर्माण करना ही मानव जीवन का प्रधान उद्देश्य है क्योंकि चरित्रवान एवं आचरणशील व्यक्ति को ही दैवी संपत्तियों का अजस्र अनुदान प्राप्त होता है। वरना वह ईश्वरीय सत्ता न स्तुति से प्रसन्न होती है और न निंदा से क्रोधित। वह तो कर्मानुसार ही फल देती है। वह परमोच्च सत्ता सर्वव्यापी है अतः मनुष्य को गुप्त रूप से भी पाप नहीं करना चाहिए।

ॐ-परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम और स्वरूप है। ॐ परमात्मा को हृदय में धारण करने की प्रेरणा देता है।

भूर्-समानता तथा एकता का प्रतीक है। यह हमें निर्देशित करता है कि हमें दूसरों के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं, समानता के आधार पर वंश, जाति, नाम, समुदाय, स्त्री, पुरुष किसी को भी छोटा-बड़ा नहीं समझना है, अच्छे-बुरे कर्म से ही ऊँच-नीच की पहचान करनी चाहिए।

भुवः-मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है, फल देने वाला परमात्मा है। आनंद का सर्वोत्तम केंद्र कर्त्तव्यपालन को ही मानना चाहिए न कि मनोनुकूल परिस्थितियों से प्राप्त सुख को। कर्त्तव्य कर्म को लक्ष्य मानकर तदनुसार कर्म करने वाला कर्मयोगी सदैव आत्मतुष्ट रहता है।

स्वः—यह शब्द हमें बोध कराता है कि हमें प्रतिकूल तथा अनुकूल परिस्थितियों को शुद्ध, स्थिर एवं समतुल्य बनाना चाहिए।

तत्- से तात्पर्य है कि मनुष्य पर हर समय मृत्यु गहराती रहती है। इस समय जो श्वास चल रहा है, वह दूसरे क्षण बंद हो सकता है। अतः हे प्राणी! तुझे अपने जीवन का श्रेष्ठ उपयोग करना चाहिए। क्षणिक सुख के लिए भी पाप नहीं करना चाहिए।

सवितुर्-गायत्री मंत्र का यह पद हमें अवगत कराता है कि व्यक्ति को तेजस्वी, पुरुषार्थी एवं बलवान बनना चाहिए। स्वास्थ्य, विद्या, धन, चतुराई, यश, सत्य, साहस आदि गुणों को धारण करना चाहिए।

वरेण्यं-यह पद हमें बोध देता है कि "मनुष्य का जैसा चिंतन होता है वह वैसा ही बन जाता है।" विचार एक साँचे के समान हैं तथा मानव जीवन

गीली मिट्टी के समान है। अतः मनुष्य जैसा चिंतन करता है, साँचे में उसी प्रकार का ढल जाता है। उसी के अनुसार वह आचरण करता है तथा वैसे ही मित्र भी प्राप्त करता है। अतः हमें उन्हीं विचारों, स्थितियों, व्यक्तियों का वरण करना चाहिए जो श्रेष्ठ हों।

भर्गो–यह बताता है कि मनुष्य को दुष्कर्मों से सावधान रहकर निष्पाप बनना चाहिए। पापों का परिणाम देखकर उनसे घृणा करनी चाहिए। संसार के समस्त दुःख-ताप पापों के ही परिणाम हैं। इसलिए जिन्हें दुःखों से भय और सुखों की इच्छा है उन्हें समस्त पापों को जला डालना चाहिए।

देवस्य–परमात्मा की इस पवित्र सृष्टि में जो कुछ भी है, वह पवित्र और आनंदमय है। अतः इस सृष्टि को पवित्र दृष्टि से देखो। मानव द्वारा उत्पन्न की हुई विकृतियों को दूर करके ईश्वरीय श्रेष्ठता को विकसित और प्रसारित करो। यही श्रेष्ठ कर्म है। इस देव कर्म को करने से मनुष्य देवता बन जाता है।

धीमहि–का अर्थ है, धारण करना, ग्रहण करना अर्थात हमें सब प्रकार की पवित्र शक्तियों को ग्रहण करना चाहिए। संसार में अनेक भौतिक संपदाएँ हैं यथा–धन, पद, वैभव, शारीरिक बल, संगठन, शस्त्र, विद्या, बुद्धि, बल आदि इनकी प्राप्ति से सुख मिलता है, किंतु यह सब स्थायी नहीं है, तनिक से आघात से नष्ट हो जाते हैं। आध्यात्मिक गुण-धर्म के फलस्वरूप जो सुख प्राप्त होता है, वह स्थायी होता है। इसी संपदा को शास्त्रों ने 'दैवी संपदा' कहा है। अतः हमें अपना भंडार इसी दैवी संपदा से भरना चाहिए।

धियो–यह शब्द सद्बुद्धि का प्रेरक है। मानव मस्तिष्क में अनेक विचारधाराएँ टकराती हैं। देश, काल, पात्र एवं परिस्थिति के अनुसार जो विचारधारा उचित जान पड़ती है, वही दूसरी परिस्थिति में अनुचित प्रतीत होती है। अतः हमें न्याय के आधार पर उचित निर्णय लेना चाहिए।

यो नः–यह पद हमें बोध कराता है कि परमात्मा ने हमें जो शक्ति और सामर्थ्य प्रदान की है उसे अपने हित में कम से कम एवं शेष को निस्स्वार्थ भाव से परमार्थ में नियोजित कर देनी चाहिए। प्रकृतिप्रदत्त विभूतियों से हम धन, यश, पुण्य तथा सुख अवश्य प्राप्त करें किंतु अधिकांश में उन्हें लोकहित में ही समर्पित कर देना चाहिए।

प्रचोदयात्–पद का अर्थ है मानव सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा परमात्मा से प्राप्त करता रहे तथा परमात्मा से प्रार्थना करता रहे कि हे प्रभु! मुझे सद्बुद्धि प्रदान करिए ताकि मैं उस सद्बुद्धि से प्रेरित हुआ सन्मार्ग पर चलता रहूँ एवं अन्य जनों को भी सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहूँ।

 मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)